International Journal of Enhanced Research in Educational Development (IJERED)
ISSN: 2320-8708, Vol. 12 Issue 4, July.-August, 2024, Impact Factor: 8.376

सरकार द्वारा संचालित उड़ान योजना के प्रति बालिकाओं की जागरूकता का अध्ययन

डॉ. एकता पारीक[1], सन्तोष जाट[2]

[1]प्राचार्या, बियानी गर्ल्स बी. एड. कॉलेज, जयपुर
[2]बी. एड.,एम. एड. छात्रा, बियानी गर्ल्स बी. एड. कॉलेज, जयपुर

सारांश

आज हम 21वीं सदी में जी रहे है वर्तमान युग अत्यन्त तीव्र गति से आगे बढ रहा है। मनुष्य के जीवन को सरल व सुगम बनाने के लिए निरन्तर नये आविष्कार हो रहे है। जिसमें मनुष्य का जीवन पहले की अपेक्षा वर्तमान समय में अधिक व्यवस्थित रूप से संचालित हो रहा है। नये आविष्कार एवं शिक्षा की नई नीतियों ने समाज में स्त्रियों को एक नई पहचान दिलाई है। आज प्रत्येक क्षेत्र में पुरूषों के साथ स्त्रियां कदम से कदम मिलाकर कार्य कर रहीं है। अपितु यह कहना ज्यादा उचित होगा कि प्रत्येक क्षेत्र में पुरूषों की अपेक्षा महिलाओं के परिणाम वि"वसनीय है। विकासशील देशो में मासिक धर्म स्वच्छता प्रबंधन मानव अधिकारों सामाजिक न्याय और युवा लड़कियों की शिक्षा और सशक्तिकरण से जुड़ा हुआ है। इस अध्ययन का उद्देश्य स्कूल छोड़ने वाली किशोरियों व लड़कियों के बीच मासिक धर्म, स्वच्छता, प्रथाओं और पेड वितरण कार्यक्रमों के प्रभाव का आकलन करना था।

खोजशब्दः- उड़ान योजना, उच्च प्राथमिक स्तर, जागरूकता।

परिचय

वित्तीय वर्ष 2021–22 में माननीय मुख्यमंत्री महोदय द्वारा इंदिरा महिला शक्ति उड़ान योजना का शुभारंभ दिनांक 19. 11. 2021 को किया गया है। महिला एवं बाल विकास विभाग राजस्थान सरकार इस योजना का नोडल विभाग है। इस योजना के तहत राजस्थान में गवर्नमेंट के द्वारा सभी लड़कियों और छात्राओं को फ्री सेनेटरी नैपकिन प्रदान किए जाते हैं। बालिकाओं व महिलाओं को प्रतिमाह 12 सेनेटरी पैड निशुल्क वितरित किए जाएंगे। 11 से 45 वर्ष की आयु की बालिकाएं एवं महिलाएं इस योजना के लिए पात्र है। बालिकाओं में कपड़े की जगह सेनेटरी पैड का उपयोग करने हेतु अवगत करवाना अति आवश्यक समझा जिससे महिलाओं व छात्राओं में विभिन्न रोगों से बचाव होगा साथ ही बेहतर स्वास्थ्य व स्वच्छता की सुविधा मिलेगी।

भारत में 35.5 करोड़ से ज्यादा महिलाएँ और लड़कियॉ है जिन्हें पीरियडस होते है। वि" व स्तर देखा जाए तो सैनेटरी नैपकिन का उपयोग करने वाली महिलाओं के प्रतिशत आकड़े निम्न प्राप्त हुए –

सर्वेक्षण देश	कपड़ा उपयोग करने वाली महिलाओं की संख्या	नैपकिन उपयोग करने वाली महिलाओं की संख्या
सिंगापुर व जापान	0%	100 %
इंडोनेशिया	12 %	88 %
चीन	36 %	64 %
भारत	88 %	12 %

उपरोक्त सर्वेक्षण आंकड़ो की रिपोर्ट बताती है कि भारत में सबसे कम सैनेटरी नैपकिन का उपयोग किया जा रहा है। अतः इन ऑकड़ो को ध्यान में रखते हुए राजस्थान सरकार ने उड़ान योजना की घोषणा की है।

समस्या का औचित्य :–

अधिकांश देखा गया है कि लड़किया और महिलाएं अपने स्वास्थ्य के प्रति लापरवाह होती है, **विशेषकर** ग्रामीण क्षेत्र की महिलाएं व बालिकाएँ अपने स्वास्थ्य एवं शारीरिक स्वच्छता की ओर ध्यान नहीं देती है। मध्यमवर्गीय छात्राएं जो सैनेटरी नैपकिन खरीदने में असमर्थ होती है तथा कपड़े का इस्तेमाल करती है। आज भी यह संकोच का विषय है मासिक चक्र के समय घर से बाहर जाना, ऑफिस जाना, विद्यालय गतिविधियों, सामाजिक सांस्कृतिक कार्यक्रम, घरेलु कार्य आदि क्रियाओं में भाग लेने में संकोच करती है तथा बहुत शर्मिदंगी महसूस करती है। इन समस्याओं को ध्यान में रखते हुए इन समस्याओं के निदान हेतु महिलाओं में बालिकाओं व कपड़े की जगह सैनेटरी पैड का उपयोग करने हेतु अवगत करवाना अति आव" यक समझा। जिससे महिलाओ, छात्राओं में विभिन्न रोगों से बचाव होगा साथ ही बेहतर स्वास्थ्य व शारीरिक स्वच्छता की सुविधा मिलेगी।

समस्या का कथन :–.

सरकार द्वारा संचालित उड़ान योजना के प्रति बालिकाओं की जागरूकता का अध्ययन करना।

शोध के उद्देश्य :–

1. राजस्थान सरकार द्वारा उपलब्ध करवाई जा रही सैनेटरी नैपकिन के प्रति शहरी व ग्रामीण बालिकाओं की जागरूकता का अध्ययन करना।
2. सैनेटरी नैपकिन के उपयोग से छात्राओं में विद्यालय कार्यक्रमों में सहभागिता के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना।

सम्बन्धित साहित्य :–

(1) **चन्द्रमोली वी. पटेल एस.वी. (2024)** –शोधकर्ता ने **किशोरावस्था** में लड़कियों के बीच मासिक धर्म, स्वच्छता को लेकर अध्ययन किया। जिसके उद्दे" य निम्न थे मासिक धर्म एक प्राकृतिक शारीरिक प्रक्रिया है, जिसके लिए उचित प्रबंध की **आवश्यकता** के प्रति आकलन किया गया है। सामान्य शारीरिक प्रक्रिया के साथ–साथ मासिक धर्म धार्मिक, सांस्कृतिक अर्थों से भी जुड़ा हुआ बताया गया है। मासिक धर्म के बारे में **किशोरावस्था** की लड़कियों से जानकारी प्राप्त करने हेतु। निष्कर्ष – इस शोध कार्य से पता चला कि **किशोरावस्था** की लड़कियों में मासिक धर्म के प्रति शर्मिंदगी, गलत अवधारणायें, अस्पष्ट प्रथाओं की जानकारी प्राप्त की तथा गलत अवधारणाओं को दूर किये जाने हेतु जागरूक करें।

(2) **नीरजा शर्मा (2024)** –शोधकर्ती ने मासिक धर्म के प्रति जागरूकता का अध्ययन विषय पर अध्ययन किया। जिसके उद्दे" य –**किशोरावस्था** की बालिका को मासिक धर्म में होने वाली उलझनों से अवगत कराना तथा **किशोरावस्था** के समय होने वाली समस्याओं के सुझाव से अवगत कराया गया। निष्कर्ष –निष्कर्ष में प्राप्त हुआ कि **किशोरावस्था** की बालिकाओं को मासिक धर्म के बारे में सम्पूर्ण जानकारी नहीं थी तथा मन में उत्पन्न भय व डर को दूर किया जाये।

(3) **पैरी बी.एल. (जुलाई, 2023)** – शोधार्थी ने मासिक धर्म के समय स्वच्छता और स्वास्थ्य के बारे में उपयोगी जानकारी का अध्ययन किया। जिसका उद्दे" य –मासिक धर्म के दौरान शारीरिक स्वच्छता व मासिक धर्म के समय आने वाली **परेशानियों** के बारे में जानकारी प्राप्त करना था। निष्कर्ष –इस शोध से यह निष्कर्ष निकलता है कि **किशोरावस्था** में पल रही बालिकाओं को शारीरिक स्वच्छता व शारीरिक स्वास्थ्य के बारे में पूर्ण जानकारी नहीं है, उन्हें मासिक धर्म के समय रखी जाने वाली शारीरिक स्वच्छता के बारे में अवगत करवाया जाये।

(4) **आरेफ अलसेहमी (2022)** – शोधार्थी ने अरब में मासिक धर्म के समय अस्वच्छता का अध्ययन किया। जिसके उद्दे" य प्रस्तुत शोध के अन्तर्गत सऊदी अरब में मासिक धर्म के समय अस्वच्छता का

पता लगाने हेतु अध्ययन। सरकार द्वारा मासिक धर्म के समय दी जाने वाली सम्पूर्ण सुविधाओं के बारे में जानकारी देना। निष्कर्ष में पता चला कि सऊदी अरब में कुछ इलाकों में मासिक धर्म के दौरान बहुत ज्यादा अस्वच्छता व छुआछूत जैसी भावना सामने आई। प्रस्तुत शोध द्वारा सऊदी अरब में इस क्षेत्र में आगे और शोध कार्य करने की सिफारिश की है।

(5) कैपबेल (जुलाई, 2021) – शोधार्थी ने विद्यालयी शिक्षार्थियों की सुरक्षित प्रशिक्षण आवश्यकताओं का अध्ययन किया। जिसके उद्देश्य प्रस्तुत शोध के अन्तर्गत शिक्षिकाओं द्वारा छात्राओं को मासिक धर्म से संबंधित उपयुक्त जानकारी पर बल दिया गया है। शोध के द्वारा प्रत्येक बालिका को उस विषय में जानकारी होना अति आवश्यक है। निष्कर्ष – अध्ययन में पता चला कि 90: शिक्षकों को इस मुद्दे को संभालने में विश्वास ही नहीं था, बहुत ही कम स्कूलों में इस विषय पर जानकारी दी जाती है।

साहित्य विवेचना :–

प्रस्तुत शोध में सरकार द्वारा संचालित उड़ान योजना के प्रति बालिकाओं की जागरूकता का अध्ययन करना है। इससे सम्बन्धित अध्ययन निम्न है –चन्द्रमोली वी. पटेल एस.वी. (2024), नीरजा शर्मा (2024), पैरी बी.एल. (जुलाई, 2023), आरेफ अलसेहमी (2022), कैपबेल (जुलाई, 2021) अतः उपरोक्त शोध अध्ययनों में मासिक धर्म के प्रति जागरूकता से सम्बन्धित अनेक शोध कार्य किये गये है। उन्होंने महिलाओं व छात्राओं में मासिक धर्म के प्रति जागरूकता का अध्ययन किया है। लेकिन सरकार द्वारा चलायी गयी उड़ान योजना के प्रति बालिकाओं की जागरूकता के अध्ययन से सम्बन्धित अध्ययन कार्य अभी नहीं हुआ है। इसलिए शोधकर्त्री ने इस समस्या का चयन किया है।

शोध विधि एवं उपकरण :–

प्रस्तुत शोध कार्य हेतु अनुसंधान विधि के रूप में **सर्वेक्षण विधि** का प्रयोग किया गया। इस अध्ययन में दत्त संकलन हेतु **स्वनिर्मित प्रश्नावली** का निर्माण किया गया है। प्रश्नावली में कुल 33 प्र" न रखे गये है जिनमें आयामों के अनुसार वर्गीकरण निम्न है –

क्र.स.	आयाम	प्रश्न संख्या	कुल प्रश्न
1.	उडान योजना के प्रति जागरूकता	1-13	13
2.	सैनेटरी नैपकिन उपयोग	14-18	5
3.	अंधविश्वास	19-22	4
4.	शारीरिक स्वच्छता	23-26	4
5.	सेनेटरी नैपकिन निस्तारण	27-28	2
6.	विद्यालयी कार्यक्रमों के प्रति सहभागिता	29-31	3
7.	सैनटरी नैपकिन गुणवत्ता	32-33	2
		कुल	33

जिसमें से प्र" न संख्या 1 से 12 तक के प्र" नों का सहीं उत्तर देने पर 1 अंक गलत उत्तर देने पर 0 अंक दिए गए। तथा प्र" न संख्या 13 से 33 तक बहुविकल्पी प्र" नों का निर्माण किया गया जिसका अंकन 0,1,2,3 है। साथ ही जनसंख्या के आधार पर **सीकर शहर के शहरी व ग्रामीण सरकारी विद्यालय में पढ़ने वाली कक्षा 7 व 8 की छात्राओं** का चयन किया। अध्ययन में सांख्यिकी के रूप में मध्यमान, प्रमाणिक विचलन एवं टी–परीक्षण का प्रयोग किया गया है।

न्यादर्श:

अनुसंधान हेतु यादृच्छिक न्यादर्श पद्धति में लॉटरी विधि द्वारा कुल 6 विद्यालयों का चयन किया गया। जिसमें 3 शहरी सरकारी व 3 ग्रामीण सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत उच्च प्राथमिक स्तर की कक्षा 7–8 की 250 छात्राओं का सउद्दे" य न्यादर्श विधि द्वारा चयन किया गया है।

अनुसंधान में प्रयुक्त चर

- **स्वतंत्र चर** :–उड़ान योजना
- **आश्रित चर** :–12–14 वर्ष तक की छात्राएँ

परिकल्पना : शहरी व ग्रामीण बालिकाओं में सेनेटरी नैपकिन के उपयोग के प्रति जागरूकता में अंतर नहीं पाया जाता है।

समूह	संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	टी–मान
शहरी सरकारी विद्यालय की छात्राएँ	125	51.92	5.23	4.31
ग्रामीण सरकारी विद्यालय की छात्राएँ	125	45.02	9.90	

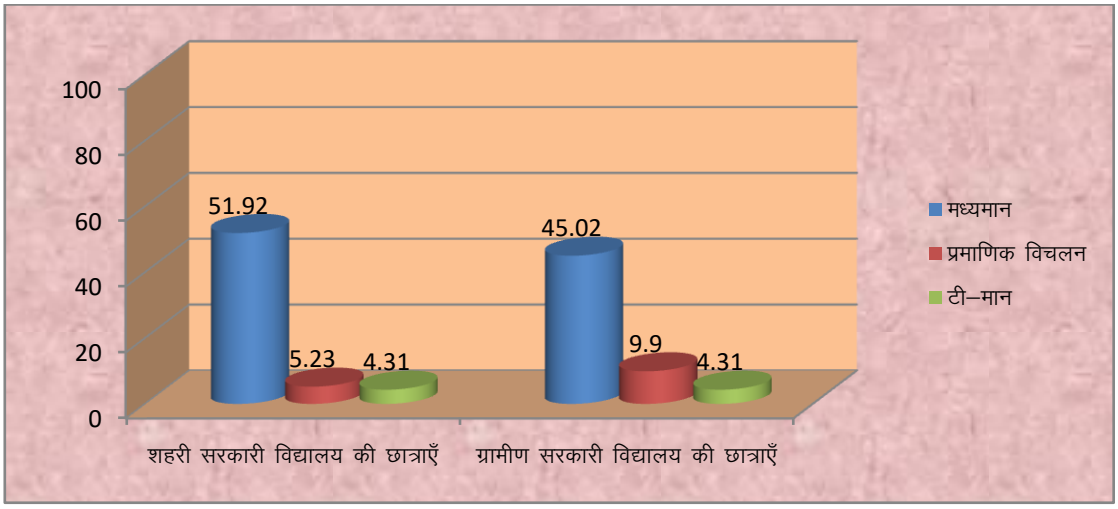

परिणाम

उपरोक्त तालिका के अवलोकन से यह स्पष्ट होता है कि शहरी व ग्रामीण सरकारी विद्यालय की छात्राओं के मध्य टी–मान 4.31 पाया गया है अतः इसका तात्पर्य है यह कि शहरी व ग्रामीण छात्राओं में सैनटरी नैपकिन के उपयोग के प्रति जागरूकता में अंतर पाया गया। अतः यह परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है। आंकडो का **विश्लेषण** करने पर यह पता चला कि शहरी छात्राओं की अपेक्षा ग्रामीण छात्राओं में सैनटरी नैपकिन उपयोग के प्रति जागरूकता कम पायी गयी।

ग्रामीण बालिकाओं में सेनैटरी नैपकिन को कैसे उपयोग में लेना चाहिए, मासिक धर्म, के समय दिन में कितनी बार पैड बदलना चाहिए कितने घंटो में पैड बदलना आव" यक होता है इन सब की जागरूकता में कमी पायी गयी। सरकार द्वारा चलायी गयी उडान योजना की विस्तृत जानकारी का अभाव पाया गया। ग्रामीण छात्राओं में मासिक धर्म के समय उपयोगी सम्पूर्ण सुरक्षा व सुविधा के साधनों की जानकारी का अभाव होने के कारण उनमें जागरूकता करना आव" यक है।

निष्कर्ष

प्रदेश की महिलाओं की सामाजिक, आर्थिक ,स्वास्थ्य एवं पोषण की स्थिति में सुधार लाना चाहिए। महिलाओं के कल्याण सुरक्षा संबंधी कानून एवं विभिन्न योजनाओं का लाभ उठाने के लिए उन्हें सक्षम व जागरूक बनाना चाहिए।महिलाओं को सशक्त व सामर्थ बनाने हेतु महिला सशक्तिकरण नीति के क्रियान्वयन का समन्वय करना चाहिए। किशोरियों की मासिक धर्म संबंधित समस्याओं के निराकरण में सहयोग प्रदान करना तथा उचित मार्गदर्शन देना चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ सूची

- चार्टर वी. गुड (1993) : ''अनुसंधान परिचय'', आगरा, चावला एण्ड संस।
- धवन और नितेश (2006) : ''सर्व शिक्षा अभियान एक अध्ययन'', मध्यप्रदेश।
- कपिल एच. के. (2012) : ''सांख्यिकी के मूल तत्व'', आगरा, एच.पी. भार्गव बुक हाऊस।
- मंगल एस. के. (2008) : ''शैक्षिक अनुसंधान एवं विधियाँ'', नई दिल्ली, प्रिंटिग हॉल ऑफ इण्डिया।
- नवरंग राय व रोशन लाल : ''सामान्य जागरूकता व सामान्य अध्ययन'', राय पब्लिकेशन्स।

WEBSITES

[1]. https://www.tourism.rajasthan.gov.in
[2]. https://govtschemes.in
[3]. https://yojanagovernment.in
[4]. https://www.mygov.in/hindi/girlseducation.html